10/7/20 - विभाग - हिन्दी नाम - डॉ० साधना कुमारी Time - 10.30

Lecture - I 1

मानसरोदक-खण्ड का सारांश

मध्यकालीन हिन्दी काव्य में निर्गुण धारा की प्रेममार्गी शाखा के प्रवर्तक जायसी की अनूठी कृति है। 'पद्मावत' और "मानसरोदक-खण्ड" है। उसका सबसे अधिक मार्मिक और प्रतीकात्मक अंश। इसमें पद्मिनी की जलक्रीड़ा का मोहक वर्णन हुआ है। अलौकिकता का दर्शन इसकी विशेषता है।

सखियों के साथ पद्मिनी सरोवर के किनारे आती है। स्नान करने के लिए उसके बाल खोले तो उसका सौंदर्य द्विगुणित हो गया। उसके बाल की छाया से घटाओं का आभास होने लगा और अंधियाली छा गई। उसके सौंदर्य को कवि ने व्यापकता के साथ चित्रित किया है, नारी-सौंदर्य-वर्णन की कलात्मकता झाँकती है।

सभी सखियाँ सरोवर में जलक्रीड़ा करने लगीं। उसकी सखियाँ पुष्प के समान हैं। उन सब की जलक्रीड़ा देखकर लीला चतुर हंस भी लज्जित होकर किनारे बैठ गया। जलक्रीड़ारत पद्मिनी चाँद के समान लग रही थी और सखियाँ ताराओं के समान। फिर बाजी लगाकर सभी सखियाँ खेल खेलने लगीं। उनमें एक अल्हड़ थी, जो खेलना नहीं जानती थी। उसका हार खो जाता है। तब सभी सखियाँ हार खोजने का प्रयत्न करती हैं लेकिन नहीं मिलता है। जब पद्मिनी खोजने जाती है तो सरोवर तुरन्त हार ऊपर ला देता है। इससे सबों में खुशी की लहरें उत्पन्न होती हैं। पद्मिनी की मुस्कान से सर्वत्र प्रकाश फैल जाता है।

वस्तुतः "मानसरोदक खण्ड" प्रतीकात्मक है। इसमें पद्मिनी ब्रह्मस्वरूपा है। उसके लौकिक वर्णन में कवि ने अलौकिकता का संकेत दिया है। सर्वप्रथम उसके सौंदर्य में अलौकिक सत्ता का संकेत मिलता है। पद्मिनी जब बाल बिखराती है तो दिन में ही अंधियाली छा जाती है: "छपि गै दिनहिं भानु कै दसा। लेइ निसि नखत चाँद परगसा॥"

जब पद्मिनी सरोवर के किनारे उतरती है तो सरोवर

के हृदय में हिलोरें उत्पन्न होती है और मुक्ति समना से चरण स्पर्श करना चाहता है।

"सरवर रूप विमोहा, हिये हिलोरहिं लेइ।
पाँव छुवै मकु पावौं, एही मिस लहरैं देइ॥"

यहाँ सरोवर जीवात्मा का प्रतीक है। जब जीवात्मा को परमात्मा का साक्षात्कार होता है तो उसके हृदय में आनंदातिरेक की लहरें उत्पन्न होती है। वह ब्रह्म का चरण स्पर्श कर मोक्ष प्राप्त करना चाहती है। तभी तो कहा गया है —

"सरवर नहीं समाय संसारा। चाँद नहाइ पैठ लेइ तारा॥"

अर्थात् ब्रह्म का साक्षात्कार होने पर जीव की खुशी का ठिकाना नहीं रहता है। उसके हृदय में परमानंद की ज्योति छिटक जाती है। स्पष्टतः यहाँ रूप वर्णन में रहस्यात्मक संकेत हैं। परमात्मा की दिव्य छटा और जीवात्मक प्रवृतियां का संकेत दिया गया है।

परमात्मा की आभा संपूर्ण संसार में दिखाई पड़ने लगे तो यह समझना चाहिए कि वहाँ कवि अपने रहस्यात्मक संकेत को स्पष्ट कर रहा है। आत्मा में ईश्वर की झलक आने पर सम्पूर्ण सृष्टि में उसकी ज्योति दिखायी पड़ती है। संसार में जो उज्ज्वलता, कांतिमयता है, सब में उसी परोक्ष ज्योति की झलक मिलती है। इसका रूप पारस के समान है। जो जैसा चाहता है, उसे वैसे ही ज्योति मिलती है :—

"पावा रूप रूप जस चहा, ससि मुख जनु दरपन होइ रहा।
"नयन जो देखा कमल भा, निरमल नीर सरीर।
हँसत जो देखा हंस भा, दसन जोति नग हीर॥"

यहाँ बिम्बप्रतिबिम्ब भाव है अर्थात पद्मिनी बिम्ब है और जगत उसका प्रतिबिम्ब। कमल, निर्मल, नीर, हंस, मोती आदि को उसी की उज्ज्वलता मिली है।

परमात्मा रूपी पद्मिनी का सौंदर्य ऐसा दिव्य प्रभावशाली है कि उसके होने से सूर्य भी अपनी चमक खो देता है—